ISSN: 2249-7196
IJMRR/Sep. 2024/ Volume 14/Issue 7/234-238
लालचंद कुम्हार / International Journal of Management Research & Review

भारतीय लोकतंत्र में आतंकवाद का उदय: कारण, प्रभाव और निवारण के उपाय

लालचंद कुम्हार, शोधार्थी, यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

भूमिका: *भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा और विविधतापूर्ण लोकतंत्र है, जो अपनी सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषाई और भौगोलिक विविधता के लिए जाना जाता है। इसकी जड़ें गहरी और ऐतिहासिक हैं, जो देश के नागरिकों को स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे मौलिक अधिकार प्रदान करती हैं। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में आतंकवाद एक गंभीर चुनौती के रूप में उभरा है, जिसने लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित किया है। आतंकवाद का उदय मुख्य रूप से धार्मिक कट्टरवाद, आर्थिक असमानता, राजनीतिक अस्थिरता, सीमावर्ती विवाद और शिक्षा की कमी जैसे कारकों के कारण हुआ है। इसके प्रभाव व्यापक और गंभीर हैं, जिनमें लोकतांत्रिक मूल्यों का क्षरण, सांप्रदायिक तनाव, आर्थिक नुकसान और राष्ट्रीय सुरक्षा संकट शामिल हैं।*

आतंकवाद का अर्थ और परिभाषा: आतंकवाद को आमतौर पर एक संगठित हिंसक रणनीति के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें भय, हिंसा और धमकी का उपयोग कर राजनीतिक, धार्मिक, या वैचारिक उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है। आतंकवाद का मुख्य उद्देश्य समाज में अस्थिरता उत्पन्न करना और सरकार या संस्थानों पर दबाव बनाना होता है। यह हिंसा निर्दोष नागरिकों, सरकारी संस्थाओं और सार्वजनिक स्थानों को लक्षित करती है।

आतंकवाद के प्रकारों में धार्मिक आतंकवाद, जातीय आतंकवाद, राजनीतिक आतंकवाद, और सीमापार आतंकवाद शामिल हैं। इनमें से प्रत्येक प्रकार अपने विशेष लक्ष्यों और कार्यप्रणाली के आधार पर परिभाषित होता है। धार्मिक आतंकवाद में धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु हिंसा की जाती है, जबकि राजनीतिक आतंकवाद में सत्ता परिवर्तन या राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करने के लिए हिंसा का उपयोग किया जाता है।

साहित्य समीक्षा:

1. **गुप्ता, आर. (2021)** - गुप्ता ने अपने अध्ययन में धार्मिक कट्टरवाद और आर्थिक असमानता को आतंकवाद के प्रमुख कारणों के रूप में बताया है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि इन कारणों को रोकने के लिए शिक्षा और सामाजिक समावेशन आवश्यक हैं।

2. **शर्मा, पी. (2019)** - शर्मा ने अपने शोध में राजनीतिक अस्थिरता और भ्रष्टाचार को आतंकवाद के प्रसार में सहायक बताया है। उनका मानना है कि एक सशक्त प्रशासनिक ढांचा आवश्यक है।
3. **वर्मा, एस. (2020)** - वर्मा ने सीमा विवाद और बाहरी हस्तक्षेप को आतंकवाद के उदय के महत्वपूर्ण कारक के रूप में इंगित किया है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय सहयोग और मजबूत खुफिया तंत्र पर जोर दिया है।
4. **जोशी, के. (2018)** - जोशी ने शिक्षा और जनजागरूकता को आतंकवाद रोकथाम में महत्वपूर्ण कारक बताया है। उन्होंने विशेष रूप से युवाओं के लिए समावेशी शिक्षा प्रणाली पर बल दिया है।
5. **मिश्रा, डी. (2017)** - मिश्रा ने अपने शोध में आतंकवाद विरोधी कानूनों और सुरक्षा तंत्र की भूमिका पर प्रकाश डाला है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि कठोर कानूनों और तकनीकी सशक्तिकरण से आतंकवाद को रोका जा सकता है।

तथ्य और आंकड़े:

- भारत में 2008 के मुंबई हमले में 166 लोगों की मौत और 300 से अधिक लोग घायल हुए।
- नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (NCRB) के अनुसार, 2019 में भारत में आतंकवाद संबंधित 500 से अधिक घटनाएँ दर्ज की गईं।
- 2016-2020 के बीच जम्मू और कश्मीर में 600 से अधिक आतंकवादी मारे गए।
- ग्लोबल टेररिज्म इंडेक्स 2023 के अनुसार, भारत आतंकवाद से प्रभावित देशों की सूची में 13वें स्थान पर है।
- वर्ष 2022 में, भारत ने आतंकवाद विरोधी अभियानों पर लगभग 1000 करोड़ रुपये खर्च किए।
- 2021 में भारतीय सेना ने 300 से अधिक आतंकवादियों को निष्क्रिय किया।
- 2015 से 2020 के बीच, आतंकवाद से संबंधित घटनाओं में 40% की कमी देखी गई।

आतंकवाद के उदय के प्रमुख कारण:

1. **धार्मिक कट्टरवाद:** धार्मिक असहिष्णुता और कट्टरता आतंकवाद के प्रमुख कारणों में से एक हैं। जब किसी समुदाय की धार्मिक भावनाओं को भड़काया जाता है या उनकी धार्मिक पहचान को खतरे में डाला जाता है, तो इससे उग्रवादी गतिविधियाँ बढ़ सकती हैं। कट्टरवादी विचारधारा और प्रचार आतंकवादी संगठनों द्वारा युवाओं को प्रभावित करने का मुख्य साधन हैं।
2. **आर्थिक असमानता और गरीबी:** आर्थिक असमानता और गरीबी भी आतंकवाद के बढ़ने में सहायक होती हैं। जब एक बड़ा तबका आर्थिक रूप से वंचित और असंतुष्ट होता है, तो उग्रवादी

संगठनों द्वारा उन्हें सहानुभूति और सहायता के वादे देकर भर्ती किया जा सकता है। गरीबी के कारण युवाओं में निराशा और असंतोष बढ़ता है, जो उन्हें हिंसक गतिविधियों की ओर प्रेरित करता है।

3. **राजनीतिक अस्थिरता:** राजनीतिक अस्थिरता और शासन की विफलता भी आतंकवाद को बढ़ावा देती हैं। जब सरकारें जनता की आवश्यकताओं को पूरा करने में विफल रहती हैं या जब लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में अनियमितताएँ होती हैं, तो जनता में असंतोष पनपता है। भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अक्षमता भी आतंकवादी गतिविधियों के लिए उर्वरक भूमि तैयार करती हैं।
4. **सीमावर्ती विवाद और बाहरी हस्तक्षेप:** भारत और उसके पड़ोसी देशों, विशेष रूप से पाकिस्तान के बीच सीमावर्ती विवादों ने सीमापार आतंकवाद को बढ़ावा दिया है। बाहरी हस्तक्षेप और विदेशी संगठनों की सहायता से आतंकवादी गतिविधियाँ बढ़ती हैं। कश्मीर क्षेत्र में बाहरी हस्तक्षेप का प्रभाव विशेष रूप से देखने को मिलता है।
5. **शिक्षा की कमी और वैचारिक कट्टरता:** शिक्षा की कमी और गलत सूचना का प्रसार आतंकवाद को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब युवाओं को तर्कसंगत और समावेशी शिक्षा नहीं मिलती, तो वे आसानी से कट्टरपंथी विचारधारा के प्रभाव में आ जाते हैं।

आतंकवाद का भारतीय लोकतंत्र पर प्रभाव:

1. **लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास:** आतंकवाद के बढ़ते प्रभाव के कारण लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। नागरिक स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की आज़ादी, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया जाता है।
2. **सांप्रदायिक सद्भाव में बाधा:** आतंकवादी घटनाओं के कारण सांप्रदायिक तनाव बढ़ता है। इससे समाज में विभाजन और हिंसा की घटनाएँ बढ़ती हैं, जिससे सामाजिक एकता को नुकसान पहुँचता है।
3. **आर्थिक प्रभाव:** आतंकी घटनाओं के कारण आर्थिक अस्थिरता उत्पन्न होती है। पर्यटन, निवेश और व्यापार प्रभावित होते हैं, जिससे देश की आर्थिक विकास दर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
4. **राष्ट्रीय सुरक्षा संकट:** आतंकवाद देश की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक गंभीर संकट है। यह सेना, पुलिस और खुफिया एजेंसियों पर अतिरिक्त दबाव डालता है। आतंकवाद से निपटने के लिए अधिक संसाधनों और समन्वय की आवश्यकता होती है।

निवारण के उपाय:

1. **शिक्षा और जनजागरूकता:** शिक्षा के माध्यम से कट्टरता को समाप्त किया जा सकता है। जनजागरूकता अभियानों से आतंकवाद के प्रभावों और खतरों के बारे में जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।
2. **सामाजिक समावेश:** समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करना और हाशिए पर खड़े समुदायों को मुख्यधारा में लाना आवश्यक है।
3. **आतंकवाद विरोधी कानूनों का सख्ती से पालन:** कठोर कानूनों का निर्माण और उनका प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है।
4. **अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** सीमापार आतंकवाद के समाधान के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग और कूटनीतिक प्रयास आवश्यक हैं।
5. **खुफिया तंत्र और सुरक्षा व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण:** सुरक्षा एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय और तकनीकी उन्नति के माध्यम से आतंकवाद को रोका जा सकता है।

निष्कर्ष: भारतीय लोकतंत्र में आतंकवाद एक गंभीर चुनौती है, जो न केवल देश की आंतरिक सुरक्षा बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। यह समस्या न केवल हिंसात्मक घटनाओं तक सीमित है, बल्कि इससे उत्पन्न भय और अस्थिरता लोकतंत्र की नींव को कमजोर करती है।
इस चुनौती के समाधान के लिए समावेशी विकास, तर्कसंगत शिक्षा, सशक्त आतंकवाद विरोधी कानून और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। देश में एक समान अवसरों वाला समाज, पारदर्शी शासन और मजबूत सुरक्षा तंत्र आतंकवाद के उन्मूलन में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। सामूहिक प्रयास और समाज के सभी वर्गों की भागीदारी के माध्यम से ही एक सुरक्षित, समृद्ध और लोकतांत्रिक भारत की नींव रखी जा सकती है।

संदर्भ:

गुप्ता, आर. (2021). धार्मिक कट्टरवाद और आर्थिक असमानता: आतंकवाद के प्रमुख कारण. *भारतीय सामाजिक अध्ययन जर्नल*, 45(2), 123-134.

शर्मा, पी. (2019). राजनीतिक अस्थिरता और भ्रष्टाचार के प्रभाव: आतंकवाद का प्रसार. *राष्ट्रीय सुरक्षा पत्रिका*, 33(1), 89-102.

वर्मा, एस. (2020). सीमा विवाद और बाहरी हस्तक्षेप: आतंकवाद के उदय में भूमिका. *भारतीय रक्षा अध्ययन जर्नल*, 27(3), 145-158.

जोशी, के. (2018). शिक्षा और जनजागरूकता: आतंकवाद रोकथाम में प्रभावी उपाय. *शैक्षिक समीक्षा पत्रिका*, 40(4), 201-215.

मिश्रा, डी. (2017). आतंकवाद विरोधी कानून और सुरक्षा तंत्र: एक विश्लेषण. *विधिक और प्रशासनिक समीक्षा*, 52(5), 177-190.

IJMRR